भारत
INDIA
4.00
जगदेव प्रसाद
JAGDEV PRASAD
2001

भारत लेनिन अमर शहीद
जगदेव प्रसाद

सौ मे नब्बे शोषित है
नब्बे भाग हमारा है।
बाबू जगदेव प्रसाद कुशवाहा
मूलनिवासी संघ

पहली पीढ़ी मारे जायेंगे
दूसरी पीढ़ी के लोग जेल जायेंगे
तीसरी पीढ़ी के लोग राज करेंगे
शहीद बाबू जगदेव कुशवाहा

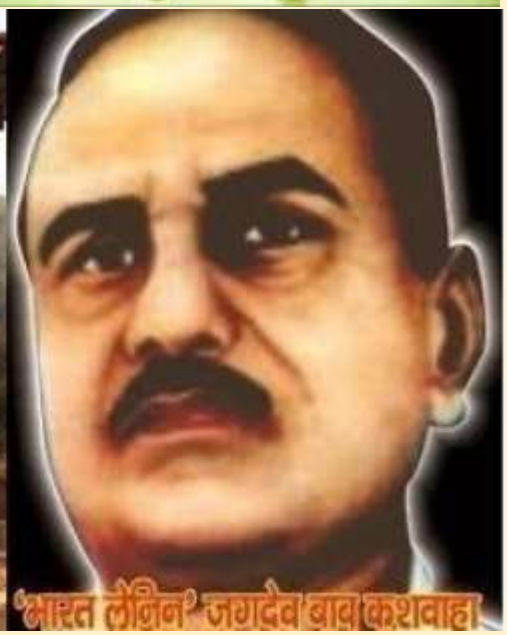
'भारत लेनिन' जगदेव बाबू कुशवाहा

NEEV
FOUNDATION FOR FUTURE
A WORLD SCHOOL
श्री लाल प्रसाद

बाबू जगदेव प्रसाद (2 फरवरी 1922 से 5 सितम्बर 1974): रूस के महान मजदूरों के नेता लेनिन जो पूरे विश्व में प्रसिद्ध है, उनके बारे में तो आपने बहुत सुना होगा। लेकिन क्या आप भारत के लेनिन बाबू जगदेव प्रसाद के बारे में जानते है जिन्होंने भारत के शोषित वर्ग के खातिर अपनी जान न्योछावर कर दी। जिनके विचारो का आज भी लोहा माना जाता है। भारत के लेनिन बाबू जगदेव प्रसाद कहते थे कि हमारी लड़ाई दीर्घकालिक लड़ाई है। "पहली पीड़ी के लोग मारे जाएंगे, दूसरी पीड़ी के लोग जेल जायेंगे, तीसरी पीड़ी के लोग राज करेंगे।" उत्तर भारत में 'शोषितों की क्रान्ति' के जनक, अर्जक संस्कृति और साहित्य के पैरोकार, शोषित समाज दल तथा सर्वहारा के महान नायक भारतीय लेनिन बाबू जगदेव प्रसाद एक ऐसी नीव डाल गये हैं, जिस पर रूस के बोल्शेविकों की भांति इस देश की गैर-सवर्ण जनता लगातार सामाजिक-आर्थिक-राजनीति और सांस्कृतिक उन्नति के पथ पर अग्रसर है।

महात्मा ज्योतिबा फूले, पेरियार रामासामी नायकर, डा. अंबेडकर और मानवतावादी महामना रामस्वरूप वर्मा के विचारों को कार्यरूप देने वाले बाबू जगदेव प्रसाद का जन्म 2 फरवरी 1922 को महात्मा बुद्ध की ज्ञान-स्थली बोध गया के समीप कुर्था प्रखंड के कुरहारी ग्राम में निर्धन परिवार में हुआ था। इनके पिता प्रयाग नारायण कुशवाहा पास के प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे तथा माता रासकली अनपढ़ थी। अपने पिता के मार्गदर्शन में बालक जगदेव ने मिडिल की परीक्षा पास की। उनकी इच्छा उच्च शिक्षा ग्रहण करने की थी, वे हाईस्कूल के लिए जहानाबाद चले गए। निम्न मध्यमवर्गीय परिवार

में पैदा होने के कारण बाबू जगदेव प्रसाद की प्रवृत्ति शुरू से ही संघर्षशील तथा जुझारू रही, वे बचपन से ही 'विद्रोही स्वाभाव' के थे। जगदेव प्रसाद जब किशोरावस्था में अच्छे कपडे पहनकर स्कूल जाते तो उच्चवर्ण के छात्र उनका उपहास उड़ाते थे उनके साथ स्कूल में बदसूलकी भी हुई। एक दिन गुस्से में आकर उन्होंने उनकी पिटाई कर दी और उनकी आँखों में धूल डाल दी, इसके लिए उनके पिता को जुर्माना भरना पड़ा और माफ़ी भी मांगनी पडी। एक दिन बिना किसी गलती के एक शिक्षक ने जगदेव बाबू को चांटा जड़ दिया, कुछ दिनों बाद वही शिक्षक कक्षा में पढ़ाते-पढाते खर्राटे भरने लगे, जगदेव जी ने उसके गाल पर एक जोरदार चांटा मारा। शिक्षक ने प्रधानाचार्य से शिकायत की। जगदेव बाबू ने निडर भाव से कहा, 'गलती के लिए सबको बराबर सजा मिलनी चाहिए, चाहे वो छात्र हो या शिक्षक'। किशोर जगदेव प्रसाद ने पंचकठिया प्रथा का अंत करवाया। उस इलाके में किसानों की जमीन की फसल का पांच कट्ठा जमींदारों के हाथियों को चारा देने की एक प्रथा सी बन गयी थी। गरीब तथा शोषित वर्ग का किसान जमीदार की इस जबरदस्ती का विरोध नहीं कर पाता था। जगदेव बाबू ने इसका विरोध करने को ठाना। जगदेव बाबू ने अपने हमजोली साथियों से मिलकर रणनीति बनायी। जब महावत हाथी को लेकर फसल चराने आया तो पहले उसे मना किया गया, जब महावत नहीं माना तब जगदेव बाबू ने अपने साथियों के साथ महावत की पिटाई कर दी और आगे से न आने की चेतावनी भी दी। इस घटना के बाद पंचकठिया प्रथा बंद हो गयी।

जब वे शिक्षा हेतु घर से बाहर रह रहे थे, उनके पिता अस्वस्थ रहने लगे। जगदेव बाबू की माँ धार्मिक स्वाभाव की थी, अपने पति की सेहत के लिए उन्होंने देवी-देवताओं की खूब पूजा, अर्चना की तथा मन्नते मांगी, इन सबके बावजूद उनके पिता का देहावसान हो गया। यहीं से जगदेव बाबू के मन में हिन्दू धर्म के प्रति विद्रोही भावना पैदा हो गयी, उन्होंने घर के सारे देवी-देवताओं की मूर्तियों, तस्वीरों को उठाकर पिता की अर्थी पर डाल दिया। इस ब्राह्मणवादी हिन्दू धर्म से जो विक्षोभ उत्पन्न हुआ वो अंत समय तक रहा, उन्होंने ब्राह्मणवाद का प्रतिकार मानववाद के सिद्धांत के जरिये किया।

जगदेव बाबू ने तमाम घरेलू झंझावतों के बीच उच्च शिक्षा हासिल की। पटना विश्वविद्यालय से स्नातक तथा परास्नातक उत्तीर्ण हुए। वही उनका परिचय चंद्रदेव प्रसाद वर्मा से हुआ, चंद्रदेव वर्मा ने जगदेव बाबू को विभिन्न विचारको को पढ़ने, जानने-सुनने के लिए प्रेरित किया, अब जगदेव बाबू ने सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया और राजनीति की तरफ प्रेरित हुए। अर्थशास्त्र में एमए की डिग्री लेने के बाद उनका रूझान पत्रकारिता की ओर हुआ। वे पत्र -पत्रिकाओं में लेखन का कार्य करने लगे। सामाजिक न्याय के आवाज उठाने वाले लेखों के कारण इन्हें काफी समस्या हुई। इसी बीच वे समाजवादी नेता उपेन्द्र नाथ के संपर्क में आये और वे 'सोशलिस्ट पार्टी' से जुड़ गए तथा पार्टी के मुखपत्र 'जनता' का संपादन भी किया। एक संजीदा पत्रकार की हैसियत से उन्होंने दलित-पिछड़ों-शोषितों की समस्याओं के बारे में खूब लिखा तथा उनके समाधान के बारे में अपनी कलम चलायी। 1955 में उन्हें हैदराबाद भेज दिया गया वहां जाकर उन्होंने पार्टी के मुखपत्र के अंग्रेजी साप्ताहिक 'सिटीजन' तथा हिन्दी साप्ताहिक 'उदय' का संपादन आरभ किया। उनके क्रांतिकारी तथा ओजस्वी विचारों से पत्र-पत्रिकाओं का सर्कुलेशन लाखों की संख्या में पहुँच गया। उन्हें धमकियों का भी सामना

करना पड़ा, प्रकाशक से भी मन-मुटाव हुआ, लेकिन जगदेव बाबू ने अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। वे संपादक पद से त्यागपत्र देकर पटना वापस लौट आये। पटना आकर जगदेव प्रसाद समाजवादियों के साथ आन्दोलन में शामिल हो गये।

बिहार में उस समय समाजवादी आन्दोलन की बयार थी, लेकिन जे. पी. तथा लोहिया के बीच सैद्धांतिक मतभेद था। जब जे. पी. ने राम मनोहर लोहिया का साथ छोड़ दिया तब बिहार में जगदेव बाबू ने लोहिया का साथ दिया, उन्होंने सोशलिस्ट पार्टी के संगठनात्मक ढांचे को मजबूत किया और समाजवादी विचारधारा का देशीकरण करके इसको घर-घर पहुंचा दिया। जे. पी. मुख्यधारा की राजनीति से हटकर विनोबा भावे द्वारा संचालित भूदान आन्दोलन में शामिल हो गए। जे. पी. नाखून कटाकर क्रांतिकारी बने, वे हमेशा अगड़ी जातियों के समाजवादियों के हित-साधक रहे। भूदान आन्दोलन में जमींदारों का ह्रदय परिवर्तन कराकर जो जमीन प्राप्त की गयी वह पूर्णतया उसर और बंजर थी, उसे गरीब-गुरुबों में बाँट दिया गया था, लोगो ने खून-पसीना एक करके उसे खेती लायक बनाया। लोगों में खुशी का संचार हुआ लेकिन भू-सामंतो ने जमीन 'हड़प नीति' शुरू की और दलित-पिछड़ों की खूब मार-काट की गयी, अर्थात भूदान आन्दोलन से गरीबों का कोई भला नहीं हुआ उनका श्रम शोषण जमकर हुआ और समाज में समरसता की जगह अलगाववाद का दौर शुरू हुआ। कर्पूरी ठाकुर ने विनोबा भावे की खुलकर आलोचना की और उनको 'हवाई महात्मा' कहा।

1957 में उन्हें सोशलिस्ट पार्टी से विक्रमगंज लोकसभा का उम्मीदवार बनाया गया मगर वे चुनाव हार गए। 1962 में बिहार विधानसभा का चुनाव कुर्था से लड़े पर विजयश्री नहीं मिल सकी। जगदेव बाबू ने 1967 के विधानसभा चुनाव में संसोपा (संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, 1966 में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी और सोशलिस्ट पार्टी का एकीकरण हुआ था) के उम्मीदवार के रूप में कुर्था में जोरदार जीत दर्ज की। उनके अथक प्रयासों से स्वतंत्र बिहार के इतिहास में पहली बार संविद सरकार बनी तथा महामाया प्रसाद सिन्हा को मुख्यमंत्री बनाया गया। जगदेव बाबू तथा कर्पूरी ठाकुर की सूझ-बूझ से पहली गैर-कांग्रेस सरकार का गठन हुआ। लेकिन यहाँ भी मुख्यमंत्री के चयन में भारी तमाशा हुआ। यहां गैर कांग्रेसी संयुक्त विधायक दल (संविद) में संसोपा सबसे बड़ी पार्टी थी जिसके 68 विधायक थे, दूसरी सोशलिस्ट पार्टी प्रसोपा के 17 सदस्य थे। इसके अलावा छोटानागपुर इलाके के एक बड़े जमींदार राजा रामगढ कहे जाने वाले कामाख्या नारायण सिंह की जेबी पार्टी जनक्रांति दल के भी 27 विधायक थे। जन क्रांति दल विधायक दल के नेता कामाख्या नारायण सिंह और उपनेता महामाया प्रसाद सिन्हा थे। संसोपा विधायक दल के नेता कर्पूरी ठाकुर थे। कायदे से कर्पूरी ठाकुर को मुख्यमंत्री होना चाहिए था लेकिन यह नहीं हुआ। कहा जाता है कि इस बात पर कुछ सवर्ण नेता अंदरखाने में सहमत हो गए कि किसी भी कीमत पर कर्पूरी ठाकुर को सीएम नहीं होने देना है और तर्क दिया गया कि मुख्यमंत्री को हराने वाला मुख्यमंत्री बनेगा। पटना शहरी क्षेत्र से मुख्यमंत्री केबी सहाय को जनक्रांति दल उम्मीदवार के रूप में महामाया प्रसाद ने हराया था। लेकिन सच्चाई यह भी थी कि केबी सहाय दो चुनाव क्षेत्रों से चनाव लड़े थे। दूसरी जगह हज़ारीबाग था, जहाँ से उन्हें जनक्रांति दल के ही एक पिछड़ी जाति से आने वाले रघुनन्दन प्रसाद ने हराया था लेकिन उनकी कोई पूछ नहीं हुई, उन्हे मंत्री भी नहीं बनाया गया।

मतलब यह था कि संविद सरकार की बुनियाद ही गलत थी। पाखंड का हाल यह था की सबसे बड़े विधायक दल का नेता उपमुख्यमंत्री था और एक बहुत छोटे दल का उपनेता मुख्यमंत्री। सरकार ने तैंतीस सूत्री कार्यक्रम बनाये। इसमें भूमि सुधार के भी बिंदु थे और उर्दू को दूसरी राजभाषा का दर्ज़ा देना था। इन दोनों कार्यक्रमों का संविद सरकार में शामिल जनसंघियों ने विरोध किया। भूमि सुधार पर कम्युनिस्टों का जोर था। संसोपा -प्रसोपा के लोगों को भी जोर देना चाहिए था, लेकिन वे तटस्थ रहे। जब ये प्रोग्राम शिथिल हुए, तब केवल राजपाट ही मुख्य ध्येय रह गया। दस महीने बाद ही कोलाहल शुरू हो गया और फरवरी 1968 में संविद सरकार गिर गयी। संसोपा का एक धड़ा अलग होकर शोषित दल बन गया, इसमें एकाध अपवाद छोड़कर सभी पिछड़ी जातियों के विधायक थे।

यह उस पाखंड की प्रतिक्रिया थी, जो मुख्यमंत्री बनाने में हुई थी। लेकिन पाखंड का विस्थापन पाखंड से ही हुआ। कांग्रेस ने शोषित दल को सरकार बनाने में समर्थन दिया तब कांग्रेस के 128 विधायक थे। पहली बार बिहार में बिंध्येश्वरी प्रसाद मंडल, एक जमींदार, लेकिन पिछड़ा वर्ग के मुख्यमंत्रित्व में सरकार बनी। गौरतलब है कि महामाया प्रसाद सिन्हा और बी पी मंडल दोनों कांग्रेसी पृष्ठभूमि के थे (बाद में मंडल फिर कांग्रेस में चले गए और दूसरे पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष बने)।

लेकिन पार्टी की नीतियों तथा विचारधारा के मसले पर लोहिया से अनबन हुई क्योंकि लोहिया ने नारा दिया था कि "ससोपा ने बाँधी गांठ पिछड़े 100 मे पावें साँठ।" इससे पिछड़े वर्ग के लोग लोहिया की ओर आकर्षित हुये लेकिन जब टिकट देने की बात आई तो उन्होने सवर्ण महिलाओं को भी पिछड़े वर्ग के कोटे से टिकट दे दिया। इस पर बाबू जगदेव ने विरोध किया और कोई समाधान न होने पर **'कमाए धोती वाला और खाए टोपी वाला'** की स्थिति देखकर संसोपा छोड़कर 25 अगस्त 1967 को **'शोषित दल'** नाम से नयी पार्टी बनाई। इसकी स्थापना के समय उन्होंनें कहा था "जिस लड़ाई की बुनियाद आज मैं डाल रहा हूँ, वह लम्बी और कठिन होगी। चूंकि मैं एक क्रांतिकारी पार्टी का निर्माण कर रहा हूँ इसलिए इसमें आने-जाने वालों की कमी नहीं रहेगी परन्तु इसकी धारा रुकेगी नहीं। इसमें पहली पीढ़ी के लोग मारे जायेगे, दूसरी पीढ़ी के लोग जेल जायेगे तथा तीसरी पीढ़ी के लोग राज करेंगे। जीत अंततोगत्वा हमारी ही होगी।"

जगदेव बाबू जमीन से जुड़े नेता थे। उन्होंने बड़े नजदीक से देखा था बहुजन समाज की उन बहन बेटियों को जो चिलचिलाती धूप व वर्षा में पेट की खातिर जमीदारों, सामंतो के खेतों में काम करती थी। उन्हें पेट भरने के लिए अनाज सामंत, भूमिहार नहीं देते थे। जो जगदेव बाबू को बर्दाश्त नहीं था। उन्होंने उचित मजदूरी के लिए आंदोलन छेड़ दिया और नारा दिया-

अबकी सावन भादों में
गोरी-गोरी चूड़ियां भादो में....

अर्थात इस बार सावन भादों के महीने में महलों में रहने वाली गोरी गोरी कलाइयों में चूड़ियां खनकाने वाली उच्च वर्णों की बहन-बेटियां खेतों में धान के पौधे लगाएगी। उनके हाथ कीचड़ में होंगे। बहुजन समाज की महिलाओं ने काम बंद कर दिया। बिहार में उच्चवर्णों में खलबली मच गई। इस बहुजन जनता उनकी जयकार करने लगी तो उन्होंने बहुजनों को संबोधित करते हुए कहा-

“शोषित-पीड़ित की इज्जत और रोटी की लड़ाई में शरीक होने वाले इस जंग ए मैदान में आए मेरे प्यारे बहादुर वफादार साथियों-आप मेरी जय-जयकार कर रहे हैं, पर जय अभी हुई कहाँ। शासन प्रशासन में, राजपाट में हर जगह वर्चस्व व अधिकार जमाए हुए सामंत और ब्राह्मणवादी व्यवस्था, आपके द्वारा मनाई गई जय-जयकार की इस आवाज पर हँस रही है। शोषित, पीड़ितों की ललकार के अनुसार क्या हमने धरती और राजपाट में में 90% हक प्राप्त कर लिया है? क्या जनता में व्याप्त राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, गैर-बराबरी का खात्मा हमने कर दिया, जिसका हमने बीड़ा उठाया था। नहीं तो फिर इस जय-जयकार सुनने के अधिकारी हम कैसे?” जगदेव बाबू का समाज जीवन स्वार्थ पर नहीं यथार्थ पर आधारित था। वे जय-जय कार के प्रबल विरोधी थे।

मार्च 1970 में जब जगदेव बाबू के दल के समर्थन से दरोगा प्रसाद राय मुख्यमंत्री बने, उन्होंने 2 अप्रैल 1970 को बिहार विधानसभा में ऐतिहासिक भाषण दिया- “मैंने कम्युनिस्ट पार्टी, संसोपा, प्रसोपा जो कम्युनिस्ट तथा समाजवाद की पार्टी है, के नेताओं के भाषण भी सुने हैं, जो भाषण इन इन दलों के नेताओं ने दिए है, उनसे साफ हो जाता है कि अब ये पार्टियाँ किसी काम की नहीं रह गयी हैं, इनसे कोई ऐतिहासिक परिवर्तन तथा सामाजिक क्रांति की उम्मीद करना बेवकूफी होगी। इन पार्टियों में साहस नहीं है कि सामाजिक-आर्थिक गैर बराबरी जो असली कारण है उनको साफ शब्दों में मजबूती से कहें। कांग्रेस, जनसंघ, स्वतंत्र पार्टी ये सब द्विजवादी पूंजीवादी व्यवस्था और संस्कृति के पोषक है। मेरे ख्याल से यह सरकार और सभी राजनीतिक पार्टियाँ द्विज नियंत्रित होने के कारण राज्यपाल की तरह दिशाहीन हो चुकी है। मुझको कम्युनिज्म और समाजवाद की पार्टियों से भारी निराशा हुयी है। इनका नेतृत्व दिनकट्टू नेतृत्व हो गया है।” उन्होंने आगे कहा- “सामाजिक न्याय, स्वच्छ तथा निष्पक्ष प्रशासन के लिए सरकारी, अर्धसरकारी और गैरसरकारी नौकरियों में कम से कम 90 सैकड़ा जगह शोषितों के लिए आरक्षित कर दिया जाये।”

शासक जातियों ने जब देखा की उच्च शिक्षा प्राप्त जगदेव प्रसाद ब्राह्मणी व्यवस्था के खिलाफ जंग ए मैदान में कूद पड़ा है और मूलनिवासी बहुजन समाज कहीं उसका हमराही बनकर ब्राह्मणी व्यवस्था को जड़ से उखाड़ने में मददगार न बन जाए इससे पहले ही शासक जातियो ने संपूर्ण क्रांति का नारा दिया। लेकिन जगदेव बाबू ने कहा- “मेरे बाप-दादों से ऊँची जाति वालों ने हलवाही करवाई है। मैं उनकी राजनैतिक हलवाही करने के लिए पैदा नहीं हुआ हूँ। यह मुझे कतई स्वीकार नहीं है और न शोषितों को स्वीकार करने के लिए कहूंगा। मैं तमाम काले-कलूटे लोगों को निश्चित नीति के तहत संगठित करूंगा और दिल्ली की गद्दी पर ऐसे ही लोगों को बैठाऊंगा। जिस प्रकार कुत्ता कभी मांस की रखवाली नहीं कर सकता उसी प्रकार देश के सामंत, ऊंची जाति एवं पूंजीपति वर्ग शोषितों, वंचितों और अछूतों का हक हिस्सा नहीं दे सकते। इसलिए उनके नेतृत्व की जगह दबे कुचले शोषितों का नेतृत्व विकसित करना है। तभी जमीन और दौलत का उचित बँटवारा और नौकरशाही का खात्मा संभव है। भारत में जब तक सामाजिक क्रांति नहीं होगी तब तक आर्थिक क्रांति हो ही नहीं सकती। इस सच्चाई को स्वीकार नहीं करते, वे अव्वल दर्जे के फरेबी और मक्कार हैं।”

वे डॉ.अंबेडकर के उस उदगार से अधिक प्रकाशित थे, जिसमें उन्होंने 24.9.1944 को मद्रास के पार्क टाउन मैदान में बहुजन को संबोधित करते हुए कहा था-"आप लोगों को यह एहसास करना चाहिए कि हमारा मकसद क्या है? हमारा उद्देश्य और आकांक्षा है, एक शासक जमात बनने की। आप सबको अपने दिमाग में यह बात रखनी होगी और सब लोगों को अपने घरों की दीवारों पर यह लिख लेना चाहिए, ताकि हर रोज आपको स्मरण होता रहे कि हमारे दिल में क्या आकांक्षा है। यह एक बहुत बड़ा उद्देश्य है जिसे हमने अपने ह्रदय में मुश्किल से पाल पाया है। हमें देखना होगा कि हम एक शासक कर्ता जमात के रूप में मान्य हो सकें। अगर आप यह एहसास करेंगे तो आप लोगों को मानना होगा कि इस मकसद को अमल में लाने के लिए हमें अनेक भारी प्रयासों की जरूरत होगी।

बिहार में राजनीति को जनवादी बनाने के लिए उन्होंने सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति की आवश्यकता महसूस की। वे मानववादी रामस्वरूप वर्मा द्वारा स्थापित 'अर्जक संघ' (स्थापना 1 जून, 1968) में शामिल हुए। जगदेव बाबू ने कहा था कि अर्जक संघ के सिद्धांतो के द्वारा ही ब्राह्मणवाद को ख़त्म किया जा सकता है और सांस्कृतिक परिवर्तन कर मानववाद स्थापित किया जा सकता है। उन्होंने आचार, विचार, व्यवहार और संस्कार को अर्जक विधि से मनाने पर बल दिया। उस समय ये नारा गली-गली गूंजता था-

मानववाद की क्या पहचान- ब्रह्मण भंगी एक सामान,
पुनर्जन्म और भाग्यवाद- इनसे जन्मा ब्राह्मणवाद।

7 अगस्त 1972 को शोषित दल तथा रामस्वरूप वर्मा की पार्टी 'समाज दल' का एकीकरण हुआ और 'शोषित समाज दल' नामक नयी पार्टी का गठन किया गया। एक दार्शनिक तथा एक क्रांतिकारी के संगम से पार्टी में नयी उर्जा का संचार हुआ। जगदेव बाबू ने पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में जगह-जगह तूफानी दौरा आरम्भ किया। वे नए-नए तथा जनवादी नारे गढ़ने में निपुण थे। सभाओं में जगदेव बाबू के भाषण बहुत ही प्रभावशाली होते थे, **जहानाबाद की सभा में उन्होंने कहा था-**

दस का शासन नब्बे पर,
नहीं चलेगा, नहीं चलेगा।
सौ में नब्बे शोषित है,
नब्बे भाग हमारा है।
धन-धरती और राजपाट में,
नब्बे भाग हमारा है।

जगदेव बाबू के इस नारे से बहुजन समाज दोस्त-दुश्मन की पहचान करने लगा। फलत: जगदेव बाबू को जान से मारने की धमकी आने लगी किंतु जगदेव बाबू विचलित नहीं हुए। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा,"उन मूर्खों को सोचना चाहिए सिंह तो सिंह ही कहलाएगा चाहे वह पिंजड़े में हो या बाहर। चाहे वह जीवित हो या मृत। वीर कभी खाट पर नहीं मरते। उनकी मौत गोली और तलवार से होती है। मौत शूरमाओं की दुलहन है जिसे गले लगाने को वे बेताब रहते हैं।"

जगदेव बाबू ने अपने भाषणों से शोषित समाज में नवचेतना का संचार किया, उन्होंने राजनीतिक विचारक टी. एच. ग्रीन के इस कथन को चरितार्थ कर दिखाया कि चेतना से स्वतंत्रता का उदय होता है, स्वतंत्रता मिलने पर अधिकार की मांग उठती है और राज्य को मजबूर किया जाता है कि वे उचित अधिकारों को प्रदान करे। जगदेव बाबू वर्तमान शिक्षा प्रणाली को विषमतामूलक, ब्राह्मणवादी विचारों का पोषक तथा अनुत्पादक मानते थे। वे समतामूलक शिक्षा व्यवस्था के पक्ष में थे। एक सामान तथा अनिवार्य शिक्षा के पैरोकार थे तथा शिक्षा को केन्द्रीय सूची का विषय बनाने के पक्षधर थे। वे कहते थे-

चपरासी हो या राष्ट्रपति की संतान,

सभी की शिक्षा हो एक समान.

प्रेमकुमार मणि ने स्पष्ट किया है कि सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में किसान आन्दोलन और इसी के समानांतर पिछड़े किसानों का त्रिवेणी संघ आन्दोलन वर्ग और जातियों में विभाजित जनता का स्वतंत्रता आन्दोलन और उसके बाद भूदान, समाजवादी, साम्यवादी आन्दोलन भयानक अंतर्विरोधों से भरा था। जगदेव प्रसाद ने जिस शोषित समाज दल की स्थापना की उसकी विचारधारा और आवेग को आज कई राजनीतिक दलों ने आत्मसात किया है। आज राजनीति में पिछड़ावाद की धूम मची है। लेकिन विचारधारा के स्तर पर इसके तमाम नेता खाली हैं। लगभग सभी किसी न किसी काली, नीली, पीली, नौरंगी, शीतला, पत्थर, टीला, बंदर, भालू आदि की मूर्तियों के सामने माथा पटककर अपनी मनौती पूरी कर रहे हैं।

उनके नारों से लोगो में एक नया ही जोश उत्पन्न होता था। एक जन नेता होने की वजह से बाबू जगदेव की जनसभाओं में लोगो का हुजूम उमड़ पड़ता था। बिहार की जनता अब इन्हें 'बिहार के लेनिन' के नाम से बुलाने लगी। इसी समय बिहार में कांग्रेस की तानाशाही सरकार के खिलाफ जे. पी. के नेतृत्व में विशाल छात्र आन्दोलन शुरू हुआ और राजनीति की एक नयी दिशा-दशा का सूत्रपात हुआ, लेकिन आन्दोलन का नेतृत्व प्रभुवर्ग के अंग्रेजीदा लोगों के हाथ में था, जगदेव बाबू ने छात्र आन्दोलन के इस स्वरुप को स्वीकृति नहीं दी। इससे दो कदम आगे बढ़कर वे इसे जन-आन्दोलन का रूप देने के लिए मई 1974 को 6 सूत्री मांगो (उनके अंतिम 6 सूत्री मांगों में दो मांगें यह भी थी कि बिहार के सभी पुस्तकालयों में और सभी दलित छात्रवासों में डॉ आंबेडकर की पुस्तकों को उपलब्ध कराया जाय। सभी मतदाताओं को फोटोयुक्त मतदाता पहचान पात्र उपलब्ध कराया जाय।) को लेकर पूरे बिहार में जन सभाएं की तथा सरकार पर भी दबाव डाला, लेकिन भ्रष्ट प्रशासन तथा ब्राह्मणवादी सरकार पर इसका कोई असर नहीं पड़ा, जिससे 5 सितम्बर 1974 से राज्य-व्यापी सत्याग्रह शुरू करने की योजना बनी। खुले मंच से शोषकों को ललकारने वाले ये महान शख्सियत सामन्ती ताकतों के आँखों की किरकिरी बन चुके थे, इनके संघर्षो की पृष्ठभूमि में इनके खिलाफ सवर्ण सामंतों का षड़यंत्र होने लगा। उन्हें लग रहा था कि यदि जगदेव प्रसाद की हत्या नहीं की गयी तो हमारा जीना मुहाल हो जायेगा, इस षडयंत्र के तहत 05 सितम्बर को कुर्था सत्याग्रह के दौरान उनकी हत्या की रची गई साजिश को अंजाम दिया गया। एक जाति विशेष के अफसरों की वहां तैनाती की गयी और सत्याग्रह में उपद्रव मचाने के लिए सवर्णों के कुछ गुंडे भेजे गए। 5 सितम्बर 1974 को जगदेव बाबू हजारों की संख्या में

शोषित समाज का नेतृत्व करते हुए अपने दल का काला झंडा लेकर आगे बढ़ने लगे। सवर्णों के भेजे गुंडों ने सत्याग्रह के दौरान पुलिस पर रोड़ेबाजी किये, इसी का बहाना बनाकर कुर्था में तैनात डी.एस.पी. ने सत्याग्रहियों को रोका तो जगदेव बाबू ने इसका प्रतिवाद किया और विरोधियों के पूर्वनियोजित जाल में फंस गए वे सत्याग्हियो को शान्त करने के लिए वरामदे से बाहर आए। पुलिस प्रशासन के मौके पर मौजूद अधिकारी ने उन्हें गोली मारने का आदेश दिया. समय अपराह्न साढ़े तीन बज रहा था. 27 राउंड गोली फायरिंग की गयी जिसमे एक गोली बारह वर्षीय छात्र लक्ष्मण चौधरी को लगी तथा दूसरी गोली बिहार लेनिन के गर्दन को बेधती हुई निकल गयी। सत्याग्रहियों में भगदड़ मच गयी, पुलिस ने धरनार्थियों पर लाठी चार्ज किया और इधर गोली लगने से घायल पड़े जगदेव प्रसाद को तुरंत उनके साथियों ने उन्हें उठाकर जीप पर रख कर ले जाने का प्रयास किया लेकिन क्रूर पुलिस घायलावस्था में उन्हें पुलिस स्टेशन ले गयी। वहां उन्होंने पानी मांगा तो थाने के सामने रहने वाली छोटन रजक की माँ पानी लेकर जगदेव बाबू को पिलाने ले गयी। परन्तु वहां पर खड़े राइफलधारियों ने उस दलित स्त्री से पानी छीन कर फेंक दिया, पानी देने के बदले पुलिस उनकी छाती पर चढ़कर उनकी छाती को बंदूकों की बटों से बराबर पीटते रहे और पानी मांगने पर उनके मुंह पर पेशाब किया। आज तक शायद ही किसी राजनेता के साथ आजाद भारत में इतना अमानवीय कृत्य किया गया होगा। अंततः वे 'जय शोषित, जय भारत' कहकर अपनी सांस थाने में ही ली। पूरे गया जिले में कर्फ्यू लागू कर दिया गया और पुलिस प्रशासन ने उनके मृत शरीर को गायब करने की साजिश की और अरवल-औरंगाबाद होते हुए डाल्टनगंज के जंगलों में इनकी लाश फेंकने के लिए ले जायी गयी, साढ़े सात बजे संध्या को रेडियो से प्रसारण होने वाले समाचार में इस खबर को छिपा लिया गया। परन्तु बी बी सी लन्दन ने पौने आठ बजे संध्या के समाचार में घोषणा किया कि बिहार लेनिन जगदेव प्रसाद की हत्या शांतिपूर्ण सत्याग्रह के दौरान कुर्था में पुलिस ने गोली मारकर कर दी। बी पी मंडल, राम लखन सिंह यादव, भोला प्रसाद सिंह और दरोगा प्रसाद राय ने बिहार के मुख्य मंत्री अब्दुल गफूर से मिलकर दवाब डाला कि जगदेव बाबू की लाश पटना में शीघ्र पहुंचायी जाए अन्यथा बिहार जल जाएगा, इस दवाब ने काम किया और जगदेव बाबू के शव को 6 सितम्बर को पटना लाया गया, उनके अंतिम शवयात्रा में देश के कोने-कोने से लाखों-लाखों लोग पहुंचे ।

उसी दिन शाम को पटना के गांधी मैदान में विशाल शोक सभा शोषित समाज दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष राम स्वरूप वर्मा, पूर्व वित्त मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार की अध्यक्षता में हुई जिसको लोकनायक जय प्रकाश नारायण, अर्जुन सिंह भदौरिया, सरला भदौरिया, कर्पूरी ठाकुर, महामाया प्रसाद सिन्हा आदि ने संबोधित किया। जगदेव बाबू से सवर्ण समाज की घृणा अगले दिन जाहिर हुई जब ब्राह्मणवादी अखबार 'आर्यावर्त' ने समाचार छापा कि 'स्वयंभू बिहार लेनिन मारे गए' ऊंची जातियों के कई गांवों में उनके हत्या पर खुशी मनाई गयी, घी के दीये जलाये गए तथा मिठाईयां बांटी गयी' । आज़ाद भारत में इस तरीके से भारत के लेनिन व भारत के महान शोषितो के नेता जगदेव प्रसाद की हस्ती को मिटा दिया गया। देश में आज इनको भारत का लेनिन इसी वजह से कहा जाता है जिन्होंने आज़ाद भारत में शोषितो के हक़ के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। शोषितों के आवाज के रूप में उभरे इस महामानव को

श्रधांजलि देने के लिए इनके जन्मदिन पर हर साल कुर्था में मेले का आयोजन किया जाता है जिसमे पाखंड और आडम्बरों के खिलाफ लोगों को जागृत किया जाता है।

जगदेव प्रसाद के संघर्षों के आलोक में अगर वर्तमान भारतीय समाज की कोढ़ बन चुकी समस्याओं का अवलोकन करें तो पाते हैं कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से किसान एवं आदिवासी सर्वाधिक शोषित हैं। ऐसे मामलों में शिक्षा, शिक्षण, शिक्षक और शिक्षा का व्यवसाय सभी सवालों के घेरे में आते हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में उल्लेख है कि हम शिक्षक हैं हमारा काम है पाठ पढ़ाना। जरूरत पड़ने पर राजा को भी पढ़ायेंगे। हमारा एक ही उद्देश्य है कि भारत की एकता, प्रगति और अखण्डता के लिये जो भी जरूरी होगा हम करेंगे। वर्तमान शिक्षा माफिया, सत्ता माफिया, मीडिया माफ़िया एवं धर्म माफ़िया का सारा समीकरण भारत के परम्परागत वर्ण माफ़िया के द्वारा संचालित है। जगदेव प्रसाद के पास इसका अचूक इलाज था कि 'चपरासी हो या राष्ट्रपति की संतान सबकी शिक्षा एक समान।'

भारत में महिलाओं की स्थिति स्वतंत्रता के सात दशक बाद भी संतोषजनक नहीं हो पायी है। मध्यवर्गीय कस्बाई और महानगरीय समाज में स्त्रियों को एक हद तक आर्थिक आजादी तो हासिल हुई है किन्तु सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में हालात ठीक नहीं हैं। इनके बरक्स आदिवासी, किसान एवं दलित जो आमतौर पर ग्रामीण और वन क्षेत्रों से संबंधित हैं वहां पर महिलाओं की स्थिति बेहतर है। उत्तर भारत की इस मानसिकता को जगदेव प्रसाद ने काफ़ी पहले ही समझ लिया था तभी उन्होंने कहा था कि 'जिन घरों की बहू-बेटियाँ (स्त्रियाँ) खेत-खलिहानों में काम नहीं करतीं, वे न तो कम्युनिस्ट हो सकते हैं और न ही समाजवादी।'

स्वतंत्र भारत में ऐसे राजनेता बहुत कम हुए हैं जिनकी समझ जगदेव प्रसाद की तरह स्पष्टवादी हों। जगदेव बाबू का मानना था कि भारत का समाज साफ़तौर पर दो तबकों मे बंटा है: शोषक एवं शोषित। शोषक हैं पूंजीपति, सामंती दबंग और ऊँची जाति के लोग और शोषितों में किसान, असंगठित एवं संगठित क्षेत्र के मजदूर, दलित और मुसलमान आदि शामिल हैं। 31 अक्तूबर 1969 को जमशेदपुर में उन्होंने सरदार पटेल के बारे में कहा था कि सरदार पटेल शोषित समाज के बिल्कुल साधारण परिवार में पैदा हुए थे इसलिए विशाल शोषित समाज को उन पर गर्व है। 19 जनवरी 1970 को लिखे एक निबंध में उन्होंने कहा कि जनसंघ (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का राजनीतिक मुखौटा और अभी की भरतीय जनता पार्टी) की नजर में भारत की सबसे बड़ी समस्या मुसलमान हैं और जनसंघ इसी को इस देश का वर्ग संघर्ष मानता है। यह सत्ता में बने रहने की कोशिशों का एक हिस्सा भर है।

जगदेव प्रसाद ने सामाजिक न्याय को परिभाषित करते हुए कहा था कि 'दस प्रतिशत शोषकों के जुल्म से छुटकारा दिलाकर नब्बे प्रतिशत शोषितों को नौकरशाही और जमीनी दौलत पर अधिकार दिलाना ही सामाजिक न्याय है।' भारत में नस्लीय श्रेष्टता का प्रदर्शन हमेशा ही अपने परिणामों में नुकसानदायक होता है। कितनी अजीबोगरीब बिडम्बना है कि किसी परिवार विशेष में पैदा हो जाने मात्र से ही यहाँ इंसान की पहचान निश्चित कर दी जाती है। विश्वविद्यालय, जहाँ से इससे छुटकारा पाने की तकनीक और शोध करने की उम्मीद की जाती है, भयंकर नस्लवाद के वीभत्स अखाड़े बने हुए हैं। इस बीमारी

से निपटने की सटीक दवा हमें अभी तक के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक तथागत बुद्ध के पास मिल सकती है। यह सवाल महत्वपूर्ण इसलिए भी है कि क्या हमारी वर्तमान शिक्षा एक बेहतर नागरिक का निर्माण कर रही है? अथवा परम्परागत पिछड़ेपन को ही पोषित-पल्लवित कर रही है। इस मामले में जगदेव प्रसाद ने देश की आम जनता से आह्वान किया कि 'पढ़ो-लिखो, भैंस पालो, अखाड़ा खोदो और राजनीति करो।'

अमरीकी अर्थशास्त्री एफ. टॉमसन के साथ 31 जुलाई 1970 को दिये साक्षात्कार में जगदेव बाबू ने कहा था कि 'समन्वय से शोषक को फायदा है और संघर्ष से शोषित को।...जनसंघ और कम्युनिस्ट पार्टी में फर्क यह है कि जनसंघ के नेता कम अमीर होते हुए भी अमीरों की हिमायत करते हैं और कम्युनिस्ट नेता अमीर होते हुए भी गरीबों का पक्ष लेते हैं। इसलिये कम्युनिस्ट पार्टी यह रूप बड़ा ही मायावी और गरीबों के लिए खतरनाक है।' हिंदुत्व के गाय, ब्राम्हण और अपराधी राष्ट्रवाद के विकल्प में नारे और विचार गढ़ने में माहिर जगदेव प्रसाद ने किसान और आदिवासी समाज के प्रतीक भैस को अपना केंद्र बनाया और कहा कि 'सदा भैंसिया दाहिने, हाथ में लीजै लट्ठ। पाँच देव रक्षा करें, दूध दही घी मट्ठ।'

बिहार के लेनिन कहे जाने पर परम्परागत और विफल सत्ताधारियों द्वारा उपहास किये जाने पर मशहूर भाषा वैज्ञानिक और इतिहास के अध्येता राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने लिखा है कि यदि मदन मोहन मालवीय को महामना कहे जाने पर 'देसवादियों' को गर्व है तो बिहार की शोषित नब्बे फीसदी जनता को अपने 'बिहार लेनिन' पर गर्व है। इसी उपाधि का प्रयोग बीबीसी लन्दन ने जगदेव बाबू की नृशंस हत्या होने के बाद अपने प्रसारण में किया था जैसे जोतिबा फुले को भारत की जनता द्वारा दी गयी उपाधि महात्मा थी। यह 'महात्मा' की उपाधि किसी रविन्द्र नाथ टैगोर की गाँधी को कटोरे में दी गयी भीख नहीं है जो गुरुदक्षिणा के रूप में 'गुरु' की उपाधि धारण करते हैं।

जगदेव बाबू भारतीय चिंतकों की उस कतार से सम्बंधित थे जो सांस्कृतिक बदलाव के लिये जीवनपर्यंत लड़ते रहे। संस्कृति और सत्ता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। भारत, पाकिस्तान, अमेरिका और अफ्रीका में एक समानता यह है कि इन स्थानों पर मूल निवासियों को शोषण और भयंकर अलगाव का सामना करना पड़ रहा है। इसका हल समता, ममता, अपनत्व तथा इंसाफ़ पसंदगी के साथ ही अपने से अलग एवं कई बार विपरीत विचार रखने वाले को भी इन्सान होने का सम्मान देकर ही हासिल हो सकता है। जगदेव बाबू एक जन्मजात क्रन्तिकारी थे, उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में अपना नेतृत्व दिया, उन्होंने ब्राह्मणवाद नामक आक्टोपस का सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक तरीके से प्रतिकार किया। भ्रष्ट तथा ब्राह्मणवादी सरकार ने साजिश के तहत उनकी हत्या भले ही करवा दी हो लेकिन उनका वैचारिक तथा दार्शनिक विचारपुन्ज आज भी हमारे लिए प्रेरणादायी है।

ओम प्रकाश त्यागी

…जब जगदेव प्रसाद ने दिया था, “सौ में नब्बे शोषित हैं और नब्बे भाग हमारा है” का नारा

जगदेव प्रसाद जॉन रस्किन की सोशल इकॉनमी से बहुत प्रभावित थे और मानते थे कि सिर्फ कुछ लोगों के हाथ में संसाधन होना अन्याय को जन्म देता है. उन्हें बिहार का लेनिन कहा जाता है.

फ्रांस की सुप्रसिद्ध क्रान्ति (1789) का मूल सिद्धांत था आजादी, समानता और भाईचारा, जो पूरे विश्व में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बदलाव का मार्गदर्शक बना. अनेक महापुरुषों को अपने मूल लक्ष्य से प्रेरित किया, उनमें से एक थे अमर शहीद जगदेव प्रसाद. जगदेव बाबू का जन्म 2 फरवरी 1922 को जहानाबाद में हुआ था और उनकी हत्या 5 सितम्बर 1974 को कर दी गई थी. उनकी शिक्षा बिहार में हुई तथा वे अर्थशास्त्र और साहित्य में पोस्ट ग्रेजुएट थे. इकोनॉमिक्स और लिटरेचर को उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में ढाल लिया था. उनका नारा था – सौ में नब्बे शोषित है और नब्बे भाग हमारा है. धन, धरती और राजपाट में भागीदारी चाहिए.

जगदेव बाबू जॉन रस्किन की सोशल इकॉनमी से बहुत प्रभावित थे और मानते थे कि सिर्फ कुछ लोगों के हाथ में संसाधन होना अन्याय को जन्म देता है. जगदेव बाबू ज्योति राव फूले के सत्य शोधक समाज से बहुत प्रभावित थे और मानते थे कि कुछ लोगों के हाथों में संसाधन होने के कारण ही शैक्षिक और रोजगारी पिछड़ापन है.जगदेव बाबू को लेनिन ऑफ बिहार भी कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने बिहार की राजनीति को ज्वलंत और क्रांतिकारी बना दिया. पर जगदेव बाबू को संसदीय लोकतंत्र में अटूट विशवास था और उन्होंने सशस्त्र क्रान्ति और नक्सल आन्दोलन को भी नकार दिया क्योंकि भारत के नक्सली आन्दोलन सामन्तवादी नेतृत्व से प्रभावित थे.

सिविल राइट मूवमेंट से मिली प्रेरणा

जगदेव बाबू का मानना था कि संविधान के निर्माताओं ने जो लक्ष्य स्थापित किए हैं. उन्हें पाने के लिए विभिन्नता में एकता, लोकतंत्र और सामाजिक क्रान्ति में तारतम्य होना चाहिए. इन्हीं मूल्यों को लेकर बाबा साहेब अम्बेडकर के सपनों को पूरा करने के लिए वे निरंतर प्रयास करते रहे. तमिलनाडू में पेरियार और बिहार में जगदेव बाबू ने जाति के वर्चस्व को तोड़ा और शोषित वर्ग को अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित किया. इस लड़ाई में उन्हें अपने समकालीन मार्टिन लूथर किंग (जूनियर) के सिविल राइट मूवमेंट से प्रेरणा मिली. मार्टिन लूथर किंग (जूनियर) की हत्या पूअर पीपल्स कैंपेन के दौरान कर दी गई थी.

यह भी एक संयोग ही था कि ठीक इसी प्रकार शोषित वर्गों के अधिकार के आन्दोलन के दौरान जगदेव बाबू की भी हत्या की गई थी. जगदेव बाबू अपने समकालीन राजनेताओं में स्वयं को सबसे निकट राम मनोहर लोहिया के पाते थे. उनके विचारों से वे बहुत प्रभावित थे. जगदेव बाबू सोशलिस्ट पार्टी के बिहार प्रांत के सचिव थे. पहली गैर-कांग्रेसी सरकार बनाने में उनका बड़ा योगदान था. राम मनोहर लोहिया ने संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी (संसोपा) में प्रस्ताव पारित किया कि 1967 के राष्ट्रीय चुनाव और विधानसभा चुनाव में 60 प्रतिशत टिकट दलित, पिछड़ा, अति-पिछड़ा, मुस्लिम और महिलाओं को दिया जाएगा.

लोहिया की बातों सहमत नहीं जगदेव बाबू

यहां से पिछड़े और अगड़े वर्गों में खुलकर मतभेद सामने आ गए. विधान सभा के चुनाव में 68 सीटों पर सोशलिस्ट पार्टी के उम्मीदवार विजयी हुए और संयुक्त विधायक दल के तहत गठबंधन की सरकार बनी. पहली गैर-कांग्रेसी सरकार में महामाया प्रसाद मुख्यमंत्री और कर्पूरी ठाकुर उप-मुख्यमंत्री बने. इस सरकार में सिर्फ 20 प्रतिशत पिछड़ों को मंत्री बनाया गया और उसमें भी अधिकतर को राज्य मंत्री बनाया गया. और तो और जो आठवीं और दसवीं कक्षा पास अगड़ी जातियों के नेता थे उनको कैबिनेट मंत्री बनाया गया और पोस्ट-ग्रेजुएट शिक्षा प्राप्त करने वाले पिछड़ी जाति के नेताओं को राज्य मंत्री.

यह समीकरण सोशलिस्ट पार्टी के मूल लक्ष्य के विपरीत था अतः जगदेव बाबू ने इसका विरोध मुख्यमंत्री से किया और बाद में राम मनोहर लोहिया से. लोहिया जी की बातों से जगदेव बाबू सहमत नहीं थे और उन्होंने प्रण किया कि संयुक्त विधायक दल की सरकार को रहने का कोई अधिकार नहीं है. उन्होंने पार्टी का विभाजन कर एक नई पार्टी का निर्माण किया जिसका नाम शोषित दल था. 31 विधायकों के साथ कांग्रेस के समर्थन से बिहार में पहली बार सतीश प्रसाद और बी.पी. मंडल को मुख्यमंत्री के पद पर सुशोभित किया. यहीं से बिहार में पिछड़े वर्ग के मुख्यमंत्री बनने का प्रचलन शुरू हुआ. इस कश्मकश के कारण बिहार में अभी तक सात बार राष्ट्रपति शासन लागू किया गया.

बी.पी. मंडल ने जगदेव बाबू के सिद्धांतों को आगे बढ़ाया

जगदेव बाबू को लगता था की उनके सिद्धांत के सबसे अनुकूल बी.पी. मंडल हैं. इसी कारण उन्हें मुख्यमंत्री बनाने में उनकी बड़ी भूमिका थी. जब मंडल मुख्यमंत्री बने तब वे मधेपुरा से सांसद थे और बाद में द्वितीय पिछड़ा आयोग उनके नेतृत्व में बना. जब हम मंडल कमीशन की रिपोर्ट की समीक्षा करते हैं तो पाते हैं कि जो मापदंड बी.पी मंडल ने आरक्षण की नीति के लिए बनाये थे वे सभी जगदेव बाबू ने राजनीतिक आन्दोलन के दौरान उठाए थे. सही मायने में देखा जाए तो यह कहना गलत नहीं होगा कि बी.पी. मंडल ने जगदेव बाबू के सिद्धांतों को आगे बढ़ाया जिसके परिणाम स्वरुप हम आज के भारत के विकास में पिछड़ों के बढ़ते योगदान को स्पष्ट देख सकते हैं.

जगदेव बाबू की एक विश्व-दृष्टि भी थी जो शोषण और उत्थान की वे बातें बिहार में कह रहे थे उन्हे वे दुनिया में पहुंचाना और लागू करवाना चाहते थे. वे अर्थशास्त्र के विद्यार्थी थे जिसका स्पष्ट मानना था कि दुनिया के विकासशील देशों को अपनी आवाज शोषण के विरुद्ध उठानी चाहिए. उनका मानना था कि खनिज पदार्थों का दोहन विकसित राष्ट्र कर रहे हैं इसलिए उनके विरुद्ध समस्त विकासशील राष्ट्रों को मोर्चा बनाना चाहिए. इससे तर्ज पर न्यू इंटरनेशनल इकोनॉमिक ऑर्डर (NIEO) को वह बहुत सटीक कदम मानते थे.

सामाजिक और राजनीतिक निवेश किया

उनका सपना था की बिहार में सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र आए जिससे समाज का समावेशी विकास हो. आज के समकालीन बिहार को देखें तो पाते हैं कि जो सामाजिक और राजनीतिक निवेश किया था वह अब एक विशाल वृक्ष का रूप ले चूका है और उनके दिखाए हुए मूल्यों का अनुसरण बिहार के सभी राजनेता कर रहे हैं. इस निवेश के कारण बिहार में किसी एक जाति या वर्ग का वर्चस्व

संभव नहीं है . यह बिहार में आजतक की सबसे सफल राजनीतिक और सामाजिक निवेश माना जाना चाहिए. इसके कारण सामाजिक समरसता की दिशा में हम लगातार बढ़ रहे हैं और आशा करते हैं कि अमर शहीद जगदेव बाबू के दिखाए हुए रास्ते पर चल कर भविष्य का बिहार सामाजिक भाईचारे का प्रतीक बनेगा.

नोटः लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर हैं.

सिविल राइट मूवमेंट से मिली प्रेरणा

जगदेव बाबू का मानना था कि संविधान के निर्माताओं ने जो लक्ष्य स्थापित किए हैं. उन्हें पाने के लिए विभिन्नता में एकता, लोकतंत्र और सामाजिक क्रान्ति में तारतम्य होना चाहिए. इन्हीं मूल्यों को लेकर बाबा साहेब अम्बेडकर के सपनों को पूरा करने के लिए वे निरंतर प्रयास करते रहे. तमिलनाडू में पेरियार और बिहार में जगदेव बाबू ने जाति के वर्चस्व को तोड़ा और शोषित वर्ग को अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित किया. इस लड़ाई में उन्हें अपने समकालीन मार्टिन लूथर किंग (जूनियर) के सिविल राइट मूवमेंट से प्रेरणा मिली. मार्टिन लूथर किंग (जूनियर) की हत्या पूअर पीपल्स कैंपेन के दौरान कर दी गई थी.

यह भी एक संयोग ही था कि ठीक इसी प्रकार शोषित वर्गों के अधिकार के आन्दोलन के दौरान जगदेव बाबू की भी हत्या की गई थी. जगदेव बाबू अपने समकालीन राजनेताओं में स्वयं को सबसे निकट राम मनोहर लोहिया के पाते थे. उनके विचारों से वे बहुत प्रभावित थे. जगदेव बाबू सोशलिस्ट पार्टी के बिहार प्रांत के सचिव थे. पहली गैर-कांग्रेसी सरकार बनाने में उनका बड़ा योगदान था. राम मनोहर लोहिया ने संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी (संसोपा) में प्रस्ताव पारित किया कि 1967 के राष्ट्रीय चुनाव और विधानसभा चुनाव में 60 प्रतिशत टिकट दलित, पिछड़ा, अति-पिछड़ा, मुस्लिम और महिलाओं को दिया जाएगा.

लोहिया की बातों सहमत नहीं जगदेव बाबू

यहां से पिछड़े और अगड़े वर्गों में खुलकर मतभेद सामने आ गए. विधान सभा के चुनाव में 68 सीटों पर सोशलिस्ट पार्टी के उम्मीदवार विजयी हुए और संयुक्त विधायक दल के तहत गठबंधन की सरकार बनी. पहली गैर-कांग्रेसी सरकार में महामाया प्रसाद मुख्यमंत्री और कर्पूरी ठाकुर उप-मुख्यमंत्री बने. इस सरकार में सिर्फ 20 प्रतिशत पिछड़ों को मंत्री बनाया गया और उसमें भी अधिकतर को राज्य मंत्री बनाया गया. और तो और जो आठवीं और दसवीं कक्षा पास अगड़ी जातियों के नेता थे उनको कैबिनेट मंत्री बनाया गया और पोस्ट-ग्रेजुएट शिक्षा प्राप्त करने वाले पिछड़ी जाति के नेताओं को राज्य मंत्री.

यह समीकरण सोशलिस्ट पार्टी के मूल लक्ष्य के विपरीत था अतः जगदेव बाबू ने इसका विरोध मुख्यमंत्री से किया और बाद में राम मनोहर लोहिया से. लोहिया जी की बातों से जगदेव बाबू सहमत नहीं थे और उन्होंने प्रण किया कि संयुक्त विधायक दल की सरकार को रहने का कोई अधिकार नहीं है. उन्होंने पार्टी का विभाजन कर एक नई पार्टी का निर्माण किया जिसका नाम शोषित दल था. 31 विधायकों के साथ कांग्रेस के समर्थन से बिहार में पहली बार सतीश प्रसाद और बी.पी. मंडल को मुख्यमंत्री के पद पर सुशोभित किया. यहीं से बिहार में पिछड़े वर्ग के मुख्यमंत्री बनने का प्रचलन शुरू हुआ. इस कश्मकश के कारण बिहार में अभी तक सात बार राष्ट्रपति शासन लागू किया गया.

बी.पी. मंडल ने जगदेव बाबू के सिद्धांतों को आगे बढ़ाया

जगदेव बाबू को लगता था की उनके सिद्धांत के सबसे अनुकूल बी.पी. मंडल हैं. इसी कारण उन्हें मुख्यमंत्री बनाने में उनकी बड़ी भूमिका थी. जब मंडल मुख्यमंत्री बने तब वे मधेपुरा से सांसद थे और बाद में द्वितीय पिछड़ा आयोग उनके नेतृत्व में बना. जब हम मंडल कमीशन की रिपोर्ट की समीक्षा करते

हैं तो पाते हैं कि जो मापदंड बी.पी मंडल ने आरक्षण की नीति के लिए बनाये थे वे सभी जगदेव बाबू ने राजनीतिक आन्दोलन के दौरान उठाए थे. सही मायने में देखा जाए तो यह कहना गलत नहीं होगा कि बी.पी. मंडल ने जगदेव बाबू के सिद्धांतों को आगे बढ़ाया जिसके परिणाम स्वरुप हम आज के भारत के विकास में पिछड़ों के बढ़ते योगदान को स्पष्ट देख सकते हैं.

जगदेव बाबू की एक विश्व-दृष्टि भी थी जो शोषण और उत्थान की वे बातें बिहार में कह रहे थे उन्हे वे दुनिया में पहुंचाना और लागू करवाना चाहते थे. वे अर्थशास्त्र के विद्यार्थी थे जिसका स्पष्ट मानना था कि दुनिया के विकासशील देशों को अपनी आवाज शोषण के विरुद्ध उठानी चाहिए. उनका मानना था कि खनिज पदार्थों का दोहन विकसित राष्ट्र कर रहे हैं इसलिए उनके विरुद्ध समस्त विकासशील राष्ट्रों को मोर्चा बनाना चाहिए. इससे तर्ज पर न्यू इंटरनेशनल इकोनॉमिक ऑर्डर (NIEO) को वह बहुत सटीक कदम मानते थे.

सामाजिक और राजनीतिक निवेश किया

उनका सपना था की बिहार में सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र आए जिससे समाज का समावेशी विकास हो. आज के समकालीन बिहार को देखें तो पाते हैं कि जो सामाजिक और राजनीतिक निवेश किया था वह अब एक विशाल वृक्ष का रूप ले चूका है और उनके दिखाए हुए मूल्यों का अनुसरण बिहार के सभी राजनेता कर रहे हैं. इस निवेश के कारण बिहार में किसी एक जाति या वर्ग का वर्चस्व संभव नहीं है . यह बिहार में आजतक की सबसे सफल राजनीतिक और सामाजिक निवेश माना जाना चाहिए. इसके कारण सामाजिक समरसता की दिशा में हम लगातार बढ़ रहे हैं और आशा करते हैं कि अमर शहीद जगदेव बाबू के दिखाए हुए रास्ते पर चल कर भविष्य का बिहार सामाजिक भाईचारे का प्रतीक बनेगा.

नोटः लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर हैं.

सौ में नब्बे शोषित हैं, शोषितों ने ललकारा है।
धन-धरती और राजपाट में, नब्बे भाग हमारा है।

आज से 45-50 साल पहले बिहार की राजनीतिक फिजाओं में यह स्लोगन काफी मशहूर हुआ करता था। यह तब के बड़े समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया के उस नारे का एक्सटेंशन था, जिसमें वह कहा करते- पिछड़ा पावै सौ में साठ। राममनोहर लोहिया पिछड़ी जातियों की 60 फ़ीसदी भागीदारी की बात करते थे। दूसरी ओर यह नारा देश के 90 प्रतिशत लोगों को शोषित बताता था और कहता था कि इस आबादी को हर जगह 90 फ़ीसदी भागीदारी मिलनी चाहिए। यह नारा देने वाले नेता थे जगदेव प्रसाद। उनके बिना उस जमाने में बिहार में कोई सरकार पूरी नहीं होती।

जगदेव प्रसाद ने जाति के सवालों को कार्ल मार्क्स के दर्शन से अपने तरीके से जोड़ा था और इसलिए वह बिहार के लेनिन कहे जाते। जनता के सवालों को नारों में ढालने में उस्ताद थे वह और इन नारों की वजह से बिहार की शोषित जनता उन्हें बहुत प्यार करती। दूसरी तरफ जिस वर्ग के ख़िलाफ़ वह बगावत की बात करते, वो उनसे नाराज रहता। उनकी एक बात बहुत चर्चित हुई थी। उन्होंने कहा था, 'जो लड़ाई मैं शुरू कर रहा हूं, वह अगले सौ साल तक चलेगी। पहली पीढ़ी मारी जाएगी, दूसरी पीढ़ी जेल में रहेगी और तीसरी पीढ़ी राज करेगी।'

लेकिन तकलीफ की बात यह है कि वह ख़ुद इस बात की ज़िंदा मिसाल बन गए। पांच सितंबर, 1974 को पुलिस फायरिंग में उनकी मौत हो गई। इस वारदात ने उस वक़्त बिहार की पूरी राजनीति को दहला दिया। वह कई सरकारों में मंत्री रह चुके थे और अपनी पार्टी के सबसे बड़े नेता थे। किसी ने सोचा नहीं था कि राजनीतिक संघर्ष में इतने बड़े नेता की यूं मौत हो सकती है। समर्थकों ने इसे हत्या करार दिया।

लोग कहते हैं कि जगदेव प्रसाद शहीद हो गए और अपनी शहादत से बिहार में पिछड़ों और दलितों की राजनीति को मजबूत कर गए। राजधानी पटना में उनके नाम से एक सड़क है, जगदेव पथ। लेकिन इससे गुजरने वाले ज़्यादातर लोगों को भी जगदेव प्रसाद और उनके विचारों के बारे में नहीं पता। यह उस बिहार की कहानी है, जहां पिछले तीन दशक से लगातार पिछड़ों का राज चल रहा है। जिस राज्य में पिछड़ों और दलितों को साथ लिए बिना कोई भी पार्टी राजनीति करने के बारे में सोच भी नहीं पाती। उसी जगह जगदेव एक भुला दी गई याद की तरह हैं।

जगदेव प्रसाद का पूरा जीवन ही विद्रोह की कहानी है। शोषकों के ख़िलाफ़ विद्रोह और ब्राह्मणवाद के खिलाफ विद्रोह। बचपन में उनके गांव के पुजारी ने कह दिया कि तुम्हारे पिता की मौत तुम्हारी वजह से हुई है। तुम्हारी जाति का पेशा है सब्ज़ी उगाना। तुम्हें इसके बजाय पढ़ाई नहीं करनी चाहिए थी। तब

उन्होंने अपने घर में मौजूद देवताओं की सभी मूर्तियों का भी अपने पिता के साथ अंतिम संस्कार कर दिया। पिता के श्राद्ध भोज में कोई खर्च नहीं किया। जब बिहार सिविल सेवा के इंटरव्यू में बोर्ड के एक सदस्य ने भी उन्हें नौकरी करने के बदले सब्ज़ी उगाने की सलाह दी, तो उन्होंने अपनी डिग्रियां वहीं फाड़ दीं।
दलितों-पिछड़ों और शोषितों के सवाल पर वह राममनोहर लोहिया के साथ हुए, लेकिन जब 1967 में बिहार में पहली गैरकांग्रेसी सरकार बनी और उसमें उन्होंने लोहिया के नारे के मुताबिक सौ में 60 पिछड़ों की भागीदारी नहीं देखी तो भड़क गए। उन्होंने लोहिया से शिकायत की और जब उनकी नहीं सुनी गई तो सौ में नब्बे की भागीदारी का नारा देकर नया शोषित दल बनाया। इस शोषित दल का बिहार की राजनीति में ऐसा दबदबा हुआ कि 1967 से 1972 के बीच कोई भी सरकार इसकी मदद के बगैर नहीं बनी। लेकिन हर बार वह सत्ता में शोषितों की भागीदारी के नाम पर भिड़ जाते और जब उनकी मांग पूरी नहीं होती तो सरकार गिर जाती।

आख़िरकार मुख्यमंत्री दारोगा प्रसाद राय के साथ उनका तालमेल बैठा और उन्होंने सत्ता में पिछड़ों, दलितों और शोषितों को हिस्सा दिलाने का काम शुरू किया। उन्होंने चीफ सेक्रेटरी से लेकर कई महत्वपूर्ण पदों पर शोषितों को जगह दिलाई, पर दुर्भाग्यवश वह सरकार भी बहुत दिनों तक चल नहीं सकी। उनका मिशन अधूरा रह गया। सरकार से निकले तो एक बार फिर से अपनी शोषित जनता को संगठित करने में जुट गए।

बिहार में जब जयप्रकाश नारायण की अगुआई में छात्र आंदोलन की शुरुआत हुई, तो जगदेव प्रसाद ने इसलिए भाग नहीं लिया कि इसमें शोषितों की ढंग से भागीदारी नहीं है। उन्होंने अपनी पार्टी के जरिए एक स्वतंत्र आंदोलन शुरू किया और यह तब काफी प्रभावी रहा।

उसी आंदोलन के सिलसिले में 5 सिंतबर, 1974 को वह मौजूदा अरवल ज़िले के कुर्था प्रखंड में गांधीवादी तरीके से सत्याग्रह करने पहुंचे थे। वहां पुलिस ने उनके गले में गोली मार दी और उनकी मौत हो गई।

इस घटना को लेकर दोनों पक्षों का बयान अलग-अलग था। सरकार और पुलिस का कहना था कि जगदेव प्रसाद के नेतृत्व में चला आंदोलन काफी उग्र हो चुका था, इसलिए गोली चलानी पड़ी। दूसरी ओर आंदोलनकारियों के मुताबिक, वे लोग शांतिपूर्ण तरीके से आंदोलन कर रहे थे। किसी साजिश के तहत जगदेव प्रसाद की हत्या की गई।

ख़बर यह भी आई कि उनके समर्थक इलाज के लिए उन्हें लेकर पटना जाना चाहते थे, लेकिन पुलिस ने रोक लिया। पुलिसवाले जगदेव प्रसाद को छीनकर थाने लेकर गये। वहां वह बार-बार पानी मांगते

रहे, लेकिन किसी ने ध्यान नहीं दिया। कुर्था थाने में इलाज के अभाव में उनकी मौत हो गई।

इस घटना के बाद उनके शव को लेकर भी काफी बवाल हुआ। कहते हैं, पुलिस गुपचुप तरीके से उनका अंतिम संस्कार करना चाहती थी, लेकिन उनके साथ राजनीति करने वाले बीपी मंडल, भोला प्रसाद सिंह जैसे कई बड़े राजनेता पटना में राजभवन के सामने धरने पर बैठ गए। तब मजबूरन जगदेव प्रसाद का शव पटना लाया गया। उनके अंतिम संस्कार में भारी भीड़ उमड़ी।

इस हत्या का आरोप तत्कालीन कांग्रेस सरकार के एक सवर्ण मंत्री पर लगा। काफी बवाल मचा। घटना के विरोध में तब की संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के एक विधायक विनायक प्रसाद यादव ने इस्तीफा दे दिया। हालांकि उसके बाद से लगातार बिहार और देश के राजनीतिक हालात बिगड़ते चले गए। अगले ही साल जनवरी में बिहार में बड़े कांग्रेसी नेता ललित नारायण मिश्र की बम मारकर हत्या कर दी गई और फिर उसी साल जून में पूरे देश में इमरजेंसी लग गई। इन घटनाओं की वजह से जगदेव प्रसाद की हत्या को लेकर जो नाराजगी थी, वह कहीं गुम होने लगी। उनकी कहानी भी इमरजेंसी और जेपी आंदोलन के बीच कहीं खो गई। लेकिन उनके मशहूर नारे आज भी बिहार में बार-बार इस्तेमाल होते हैं।

आवाज़ : गौरव आसरी

**ये लेखक के निजी विचार हैं*

---

90 फ़ीसदी मांगने वाले जगदेव के साथ क्या हुआ?

जगदेव प्रसाद : बिहार के लेनिन

जगदेव बाबू ने अपने भाषणों से शोषित समाज में नवचेतना का संचार किया, उन्होंने राजनीतिक विचारक टी. एच. ग्रीन के इस कथन को चरितार्थ कर दिखाया कि चेतना से स्वतंत्रता का उदय होता है, स्वतंत्रता मिलने पर अधिकार की मांग उठती है और राज्य को मजबूर किया जाता है कि वे उचित अधिकारों को प्रदान करे

BY ANOOP PATEL अनूप पटेल ON OCTOBER 22, 2016 3 COMMENTSREAD THIS ARTICLE IN ENGLISH

कुर्था, ब्लॉक परिसर में जगदेव प्रसाद का प्रतिमा

उत्तर भारत में 'शोषितों की क्रान्ति' के जनक, अर्जक संस्कृति और साहित्य के पैरोकार, शोषित समाज दल तथा बाद में बहुजन समाज पार्टी की स्थापना और मंडल कमीशन के प्रेरणास्रोत, सर्वहारा के महान नायक भारतीय लेनिन बाबू जगदेव प्रसाद एक ऐसी नीव डाल गये हैं, जिस पर रूस के बोल्शेविकों की भांति इस देश की गैर-सवर्ण जनता लगातार सामाजिक-आर्थिक-राजनीति और सांस्कृतिक उन्नति के पथ पर अग्रसर है।

जगदेव प्रसाद का जन्म 2 फरवरी 1922 को महात्मा बुद्ध की ज्ञान-स्थली बोध गया के समीप कुर्था प्रखंड के कुरहारी ग्राम में अत्यंत निर्धन परिवार में हुआ था। इनके पिता प्रयाग नारायण कुशवाहा पास के प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे तथा माता रासकली अनपढ़ थी। अपने पिता के मार्गदर्शन में बालक जगदेव ने मिडिल की परीक्षा पास की। उनकी इच्छा उच्च शिक्षा ग्रहण करने की थी, वे हाईस्कूल के लिए जहानाबाद चले गए। निम्न मध्यमवर्गीय परिवार में पैदा होने के कारण बाबू जगदेव प्रसाद की प्रवृत्ति शुरू से ही संघर्षशील तथा जुझारू रही, वे बचपन से ही 'विद्रोही स्वाभाव' के थे। जगदेव प्रसाद जब किशोरावस्था में अच्छे कपडे पहनकर स्कूल जाते तो उच्चवर्ण के छात्र उनका उपहास उड़ाते थे। एक दिन गुस्से में आकर उन्होंने उनकी पिटाई कर दी और उनकी आँखों में धूल डाल दी, इसके लिए उनके पिता को जुर्माना भरना पड़ा और माफ़ी भी मांगनी पडी- उनके साथ स्कूल में बदसूलकी भी हुई। एक दिन बिना किसी गलती के एक शिक्षक ने जगदेव बाबू को चांटा जड़ दिया, कुछ दिनों बाद वही

शिक्षक कक्षा में पढ़ाते-पढाते खर्राटे भरने लगे, जगदेव जी ने उसके गाल पर एक जोरदार चांटा मारा। शिक्षक ने प्रधानाचार्य से शिकायत की। जगदेव बाबू ने निडर भाव से कहा, 'गलती के लिए सबको बराबर सजा मिलनी चाहिए, चाहे वो छात्र हो या शिक्षक'। किशोर जगदेव प्रसाद ने पंचकठिया प्रथा का अंत करवाया। उस इलाके में किसानों की जमीन की फसल का पांच कट्ठा जमींदारों के हाथियों को चारा देने की एक प्रथा सी बन गयी थी। गरीब तथा शोषित वर्ग का किसान जमीदार की इस जबरदस्ती का विरोध नहीं कर पाता था। जगदेव बाबू ने इसका विरोध करने को ठाना। जगदेव बाबू ने अपने हमजोली साथियों से मिलकर रणनीति बनायी। जब महावत हाथी को लेकर फसल चराने आया तो पहले उसे मना किया गया, जब महावत नहीं माना तब जगदेव बाबू ने अपने साथियों के साथ महावत की पिटाई कर दी और आगे से न आने की चेतावनी भी दी। इस घटना के बाद पंचकठिया प्रथा बंद हो गयी।

कुर्था बाजार का दृश्य

जब वे शिक्षा हेतु घर से बाहर रह रहे थे, उनके पिता अस्वस्थ रहने लगे। जगदेव बाबू की माँ धार्मिक स्वाभाव की थी, अपने पति की सेहत के लिए उन्होंने देवी-देवताओं की खूब पूजा, अर्चना की तथा मन्नते मांगी, इन सबके बावजूद उनके पिता का देहावसान हो गया। यहीं से जगदेव बाबू के मन में हिन्दू धर्म के प्रति विद्रोही भावना पैदा हो गयी, उन्होंने घर के सारे देवी-देवताओं की मूर्तियों, तस्वीरों को उठाकर पिता की अर्थी पर डाल दिया। इस ब्राह्मणवादी हिन्दू धर्म से जो विक्षोभ उत्पन्न हुआ वो अंत समय तक रहा, उन्होंने ब्राह्मणवाद का प्रतिकार मानववाद के सिद्धांत के जरिये किया।

जगदेव बाबू ने तमाम घरेलू झंझावतों के बीच उच्च शिक्षा हासिल की। पटना विश्वविद्यालय से स्नातक तथा परास्नातक उत्तीर्ण हुए। वही उनका परिचय चंद्रदेव प्रसाद वर्मा से हुआ, चंद्रदेव वर्मा ने जगदेव बाबू को विभिन्न विचारको को पढने, जानने-सुनने के लिए प्रेरित किया, अब जगदेव बाबू ने सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया और राजनीति की तरफ प्रेरित हुए। इसी बीच वे

'सोशलिस्ट पार्टी' से जुड़ गए और पार्टी के मुखपत्र 'जनता' का संपादन भी किया। एक संजीदा पत्रकार की हैसियत से उन्होंने दलित-पिछड़ों-शोषितों की समस्याओं के बारे में खूब लिखा तथा उनके समाधान के बारे में अपनी कलम चलायी। 1955 में हैदराबाद जाकर इंगलिश वीकली 'सिटीजन' तथा हिन्दी साप्ताहिक 'उदय' का संपादन आरभ किया। उनके क्रांतिकारी तथा ओजस्वी विचारों से पत्र-पत्रिकाओं का सर्कुलेशन लाखों की संख्या में पहुँच गया। उन्हें धमकियों का भी सामना करना पड़ा, प्रकाशक से भी मन-मुटाव हुआ, लेकिन जगदेव बाबू ने अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। वे संपादक पद से त्यागपत्र देकर पटना वापस लौट आये।

बिहार में उस समय समाजवादी आन्दोलन की बयार थी, लेकिन जे. पी. तथा लोहिया के बीच सैद्धांतिक मतभेद था। जब जे. पी. ने राम मनोहर लोहिया का साथ छोड़ दिया तब बिहार में जगदेव बाबू ने लोहिया का साथ दिया, उन्होंने सोशलिस्ट पार्टी के संगठनात्मक ढांचे को मजबूत किया और समाजवादी विचारधारा का देशीकरण करके इसको घर-घर पहुंचा दिया। जे. पी. मुख्यधारा की राजनीति से हटकर विनोबा भावे द्वारा संचालित भूदान आन्दोलन में शामिल हो गए। जे. पी. नाखून कटाकर क्रांतिकारी बने, वे हमेशा अगड़ी जातियों के समाजवादियों के हित-साधक रहे। भूदान आन्दोलन में जमींदारों का हृदय परिवर्तन कराकर जो जमीन प्राप्त की गयी वह पूर्णतया उसर और बंजर थी, उसे गरीब-गुरुबों में बाँट दिया गया था, लोगो ने खून-पसीना एक करके उसे खेती लायक बनाया। लोगों में खुशी का संचार हुआ लेकिन भू-सामंतो ने जमीन का फिर से कब्जा लेना शुरू कर दिया, और दलित-पिछड़ों की खूब मार-काट की गयी। तब कर्पूरी ठाकुर ने विनोबा भावे की खुलकर आलोचना की और 'हवाई महात्मा' कहा। (देखे- कर्पूरी ठाकुर और समाजवाद : नरेंद्र पाठक)

कुर्था, ब्लॉक परिसर में जगदेव प्रसाद, शहीद स्थल

जगदेव बाबू ने 1967 के विधानसभा चुनाव में संसोपा (संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, 1966 में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी और सोशलिस्ट पार्टी का एकीकरण हुआ था) के उम्मीदवार के रूप में कुर्था में जोरदार

जीत दर्ज की। उनके अथक प्रयासों से स्वतंत्र बिहार के इतिहास में पहली बार संविद सरकार बनी तथा महामाया प्रसाद सिन्हा को मुख्यमंत्री बनाया गया। जगदेव बाबू तथा कर्पूरी ठाकुर की सूझ-बूझ से पहली गैर-कांग्रेस सरकार का गठन हुआ, लेकिन पार्टी की नीतियों तथा विचारधारा के मसले पर लोहिया से अनबन हुई और **'कमाए धोती वाला और खाए टोपी वाला'** की स्थिति देखकर संसोपा छोड़कर 25 अगस्त 1967 को **'शोषित दल'** नाम से नयी पार्टी बनाई। बिहार में राजनीति को जनवादी बनाने के लिए उन्होंने सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति की आवश्यकता महसूस की। वे मानववादी रामस्वरूप वर्मा द्वारा स्थापित 'अर्जक संघ' (स्थापना 1 जून, 1968) में शामिल हुए। जगदेव बाबू ने कहा था कि अर्जक संघ के सिद्धांतो के द्वारा ही ब्राह्मणवाद को ख़त्म किया जा सकता है और सांस्कृतिक परिवर्तन कर मानववाद स्थापित किया जा सकता है। उन्होंने आचार, विचार, व्यवहार और संस्कार को अर्जक विधि से मनाने पर बल दिया। उस समय ये नारा गली-गली गूंजता था-

मानववाद की क्या पहचान- ब्रह्मण भंगी एक सामान,
पुनर्जन्म और भाग्यवाद- इनसे जन्मा ब्राह्मणवाद।

7 अगस्त 1972 को शोषित दल तथा रामस्वरूप वर्मा की पार्टी 'समाज दल' का एकीकरण हुआ और 'शोषित समाज दल' नामक नयी पार्टी का गठन किया गया। एक दार्शनिक तथा एक क्रांतिकारी के संगम से पार्टी में नयी उर्जा का संचार हुआ। जगदेव बाबू ने पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में जगह-जगह तूफानी दौरा आरम्भ किया। वे नए-नए तथा जनवादी नारे गढ़ने में निपुण थे। सभाओं में जगदेव बाबू के भाषण बहुत ही प्रभावशाली होते थे, **जहानाबाद की सभा में उन्होंने कहा था-**

दस का शासन नब्बे पर,
नहीं चलेगा, नहीं चलेगा। सौ में नब्बे शोषित है,
नब्बे भाग हमारा है।
धन-धरती और राजपाट में,
नब्बे भाग हमारा है।

जगदेव बाबू ने अपने भाषणों से शोषित समाज में नवचेतना का संचार किया, उन्होंने राजनीतिक विचारक टी. एच. ग्रीन के इस कथन को चरितार्थ कर दिखाया कि चेतना से स्वतंत्रता का उदय होता है, स्वतंत्रता मिलने पर अधिकार की मांग उठती है और राज्य को मजबूर किया जाता है कि वे उचित अधिकारों को प्रदान करे।

बिहार की जनता अब इन्हें 'बिहार के लेनिन' के नाम से बुलाने लगी। इसी समय बिहार में कांग्रेस की तानाशाही सरकार के खिलाफ जे. पी. के नेतृत्व में विशाल छात्र आन्दोलन शुरू हुआ और राजनीति की एक नयी दिशा-दशा का सूत्रपात हुआ, लेकिन आन्दोलन का नेतृत्व प्रभुवर्ग के अंग्रेजीदा लोगों के हाथ में था, जगदेव बाबू ने छात्र आन्दोलन के इस स्वरुप को स्वीकृति नहीं दी। इससे दो कदम आगे बढ़कर वे इसे जन-आन्दोलन का रूप देने के लिए मई 1974 को 6 सूत्री मांगो को लेकर पूरे बिहार में जन सभाएं की तथा सरकार पर भी दबाव डाला , लेकिन भ्रष्ट प्रशासन तथा ब्राह्मणवादी सरकार पर इसका कोई असर नहीं पड़ा, जिससे 5 सितम्बर 1974 से राज्य-व्यापी सत्याग्रह शुरू करने की योजना बनी। 5 सितम्बर 1974 को जगदेव बाबू हजारों की संख्या में शोषित समाज का नेतृत्व करते हुए अपने दल का काला झंडा लेकर आगे बढ़ने लगे। कुर्था में तैनात डी. एस. पी. ने सत्याग्रहियों को रोका तो जगदेव बाबू ने इसका प्रतिवाद किया और विरोधियों के पूर्वनियोजित जाल में फंस गए। पुलिस ने उनके ऊपर गोली चला दी। गोली सीधे उनके गर्दन में जा लगी, वे गिर पड़े। सत्याग्रहियों ने उनका बचाव किया, किन्तु क्रूर पुलिस घायलावस्था में उन्हें पुलिस स्टेशन ले गयी। पुलिस प्रशासन ने उनके मृत शरीर

को गायब करना चाहा, लेकिन भारी जन-दबाव के चलते उनके शव को 6 सितम्बर को पटना लाया गया, उनकी अंतिम शवयात्रा में देश के कोने-कोने से लाखो-लाखों लोग पहुंचे।

जगदेव बाबू पर बहुत कम लिखा गया है उनके संपादन में निकलने वाले पत्र-पत्रिकाओं को सहेजा नहीं गया है जिससे जगदेव बाबू का व्यापक व्यक्तित्व जनमानसस के सामने नहीं आ पाया है। प्रसिद्द भाषाशास्त्री डा. राजेन्द्र प्रसाद सिंह और शशिकला द्वारा सम्पादित 'जगदेव प्रसाद' वांग्मय में प्राथमिक स्रोत- वक्तव्यों, भाषणों और उनके साक्षात्कारों का संकलन किया गया है।

सन्दर्भ स्रोत-

अनूप पटेल (2016), मंडल के बाद का भारत और पिछड़ा वर्ग, लोकसंघर्ष, पेज 9-12।

नरेंद्र पाठक (2008), कर्पूरी ठाकुर और समाजवाद, दिल्ली: मेधा बुक्स।

राजेन्द्र प्रसाद सिंह और शशिकला (2011), जगदेव प्रसाद वांग्मय, नयी दिल्ली: सम्यक प्रकाशन

शोषित, 7 नवम्बर, 1969

शोषित, 16 अप्रैल, 1970

जगदेव प्रसाद – बिहार के लेनिन

जगदेव प्रसाद बिहार प्रान्त में जन्मे वे एक क्रन्तिकारी राजनेता थे। इन्हें 'बिहार लेनिन' के नाम से जाना जाता है। जगदेव बाबू को बिहार लेनिन उपाधि हजारीबाग जिला में पेटरवार (तेनुघाट) में एक महती सभी में वहीं के लखन लाल महतो, मुखिया एवं किसान नेता ने अभिनन्दन करते हुए दी थी। एक महान व्यक्तित्व का जन्म – बोधगया के समीप कुर्था प्रखंड के कुराहरी गांव में जगदेव प्रसाद का जन्म 2 फरवरी 1922 को हुआ। बिहार में जाति व्यवस्था के अनुसार दांगी जाति में जन्मे जो कुशवाहा की उपजाति है। उनके के पिता का नाम प्रयाग नारायण और माता का नाम रसकली देवी था। पिता स्कूल में शिक्षक थे और माता गृहणी।

जगदेव प्रसाद बचपन से ही मेधावी छात्र थे। अर्थशास्त्र में एमए की डिग्री लेने के बाद उनका रूझान पत्रकारिता की ओर हुआ। वे पत्र -पत्रिकाओं में लेखन का कार्य करने लगे। सामाजिक न्याय के आवाज उठाने वाले लेखों के कारण इन्हें काफी समस्या हुई। इन्ही दिनों वे सोसलिस्ट पार्टी से जुड़ गए ,उन्हें सोशलिस्ट पार्टी के मुखपत्र 'जनता' में संपादन का कार्यभार सौपा गया। 1955 में हैदराबाद जाकर अंग्रेजी साप्ताहिक 'सिटीजन ' और हिंदी पत्रिका 'उदय' के संपादन से जुड़े। अनेक धमकियों के बावजूद ये सामजिक न्याय और शोषितों के अधिकार हेतु जागरण के लिए अपनी लेखनी खूब चलाई प्रकाशक से मनमुटाव और अपने सिद्धांतो से समझौता न करने की प्रवृति के कारन वे त्यागपत्र देकर वापस पटना आ गए।

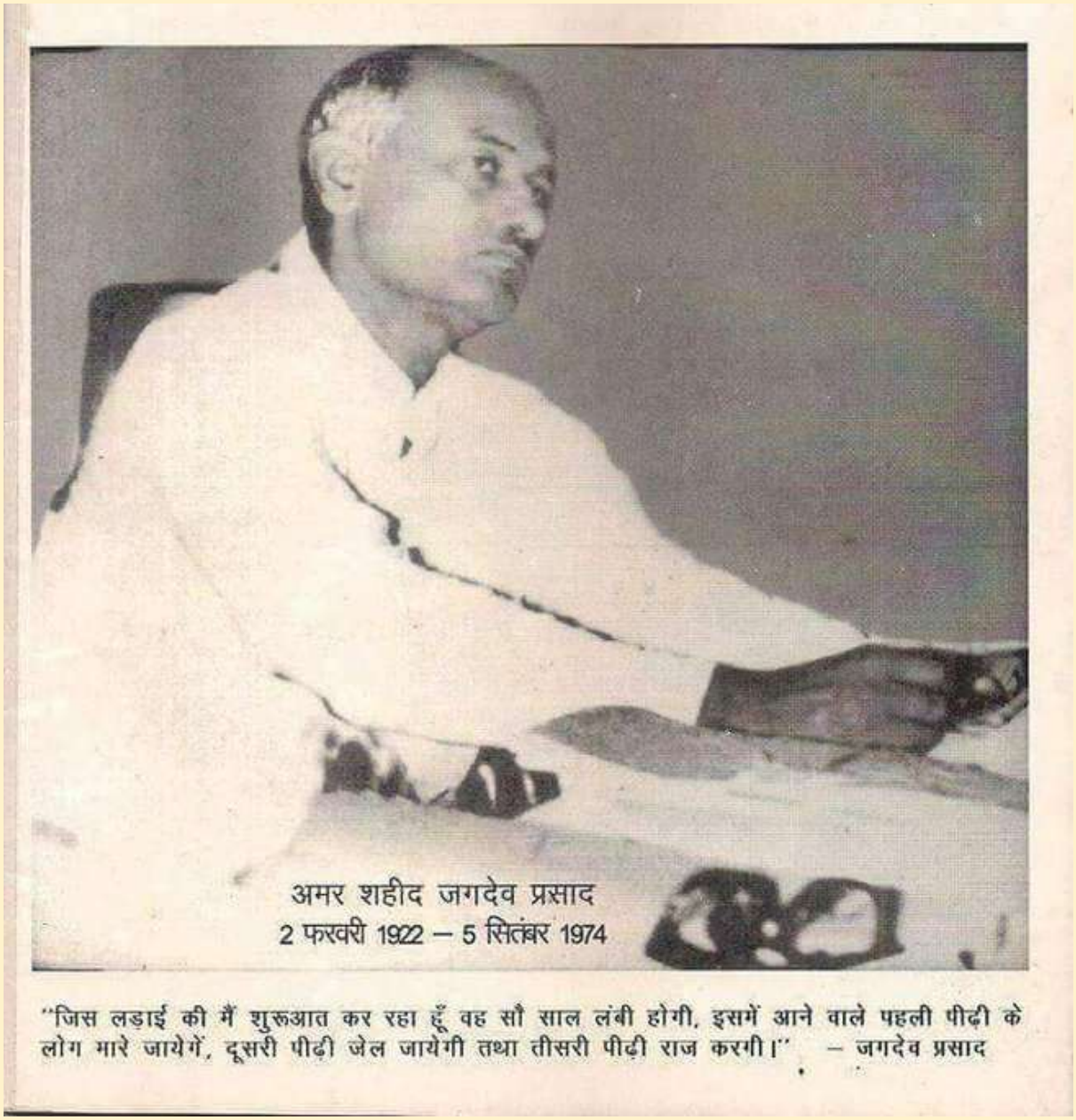

पटना आकर जगदेव प्रसाद समाजवादियों के साथ आन्दोलन में शामिल हो गए। 1957 में उन्हें पार्टी से विक्रमगंज लोकसभा का उम्मीदवार बनाया गया मगर वे चुनाव हार गए। 1962 में बिहार विधानसभा का चुनाव कुर्था से लड़े पर विजयश्री नहीं मिल सकी। वे 1967 में वे कुर्था विधासभा से पहली बार चुनाव जीते। इसी साल उनके अथक प्रयासों से स्वतंत्र बिहार के इतिहास में पहली बार गैर कांग्रेसी सरकार बनी और महामाया प्रसाद सिन्हा को मुख्यमंत्री बनाया गया। पहली गैर-कांग्रेस सरकार का गठन हुआ। बाद में पार्टी की नीतियों तथा विचारधारा के मसले पर उनकी राम मनोहर लोहिया से अनबन हुई।

शोषित दल का गठन – 'कमाए धोती वाला और खाए टोपी वाला' की स्थिति देखकर जगदेव प्रसाद ने संसोपा छोड़ दिया। संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, 1966 में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी और सोशलिस्ट पार्टी का एकीकरण हुआ था। जगदेव प्रसाद ने 25 अगस्त 1967 को 'शोषित दल' नाम से नई पार्टी बनाई।

उस समय अपने भाषण में कहा था- "जिस लड़ाई की बुनियाद आज मैं डाल रहा हूं, वह लम्बी और कठिन होगी। चूंकि मै एक क्रांतिकारी पार्टी का निर्माण कर रहा हूं इसलिए इसमें आने-जाने वालों की कमी नहीं रहेगी परन्तु इसकी धारा रुकेगी नहीं। इसमें पहली पीढ़ी के लोग मारे जाएंगे, दूसरी पीढ़ी के लोग जेल जाएंगे तथा तीसरी पीढ़ी के लोग राज करेंगे।जीत अंततोगत्वा हमारी ही होगी।

शोषित समाज दल – 7 अगस्त 1972 को शोषित दल और रामस्वरूप वर्मा जी की पार्टी 'समाज दल' का एकीकरण हुआ और 'शोषित समाज दल' नमक नई पार्टी का गठन किया गया। एक दार्शनिक और एक क्रांतिकारी के संगम से पार्टी में नई उर्जा का संचार हुआ। जगदेव बाबू पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में जगह-जगह तूफानी दौरा आरम्भ किया। बिहार की राजनीति में एक ऐसे दौर की शुरुआत हुई जब जगदेव प्रसाद के क्रांतिकारी भाषण से कई तबके के लोगों को परेशानी होने लगी।

कुर्था में शहादत – पांच सितम्बर 1974 को कुर्था में जनसभा दौरान जगदेव बाबू की हत्या कर दी गई। उस दिन रैली में में बीस हजार लोग जुटे थे। जगदेव बाबू ज्यों ही लोगों को संबोधित करने के लिए बाहर आए पुलिस प्रशासन के मौके पर मौजूद अधिकारी ने जगदेव बाबू को गोली मारने का आदेश दिया। समय अपराह्न साढ़े तीन बज रहे थे। 27 राउंड गोली फायरिंग की गई जिसमें एक गोली बारह वर्षीय दलित छात्र लक्ष्मण चौधरी को लगी और दूसरी गोली जगदेव बाबू के गर्दन को बेधती हुई निकल गई। जगदेव बाबू ने 'जय शोषित, जय भारत' कहकर अपने प्राण त्याग दिए। सत्याग्रहियों में भगदड़ मच गई। पुलिस ने धरना देने वालों पर लाठी चार्ज किया। उसी दिन बीबीसी लन्दन ने पौने आठ बजे संध्या के समाचार में घोषणा किया कि बिहार लेनिन जगदेव प्रसाद की हत्या शांतिपूर्ण सत्याग्रह के दौरान कुर्था में पुलिस ने गोली मारकर कर दी।

जगदेव प्रसाद के दिए नारे :- सौ में नब्बे शोषित हैं, नब्बे भाग ललकारा है।। दस का शासन नब्बे पर, नहीं चलेगा, नहीं चलेगा।। गोरी गोरी हाथ कादो में, अगला साल के भादो में।। दो बातें हैं मोटी-मोटी, हमें चाहिए इज्जत और रोटी।।

जब मैंने पहली बार जगदेव प्रसाद को देखा

अमर शहीद जगदेव प्रसाद की जयंती के मौके पर उनसे जुड़ा संस्मरण बता रहे हैं बिहार विधानसभा के पूर्व सदस्य एन. के. नंदा। उनके मुताबिक, उन्होंने जगदेव बाबू एक बड़े राजनीतिज्ञ के अलावा प्रभावी व्यक्तित्व वाले सामाजिक सुधारक भी थे

BY N.K NANDA एनके नन्दा ON FEBRUARY 2, 2020 1 COMMENTREAD THIS ARTICLE IN ENGLISH

अमर शहीद जगदेव प्रसाद (2 फरवरी, 1922 – 5 सितम्बर, 1974) पर विशेष

उन दिनों मेरी उमर करीब 23 वर्ष की रही होगी। राजनीति में मेरी सक्रियता संपूर्ण क्रांति आंदोलन से जुड़ाव के कारण पहले ही हो चुकी थी। लेकिन जगदेव प्रसाद को देखने और सुनने का वह पहला मौका था। वह भी उनकी हत्या के ठीक चार दिन पहले यानी 1 सितंबर 1974 को। वे हमारे इलाके में आए थे, एक जनसभा को संबोधित करने। हमारा इलाका मतलब पटना के दुल्हिन बाजार का इलाका। खूब भीड़ जुटी थी, जगदेव बाबू को देखने। ऐसा लग रहा था, मानों दुल्हिन बाजार में जन-सैलाब उमड़ गया हो।

जगदेव बाबू सांवले रंग के थे, लेकिन चेहरे पर तेज ऐसा कि देखने वाला एक नजर में ही प्रभावित हो जाए। उन्होंने धोती-कुरता और बंडी पहन रखा था। सभी लोगों को जगदेव बाबू के संबोधन का इंतजार था। जैसे-जैसे समय बढ़ता जा रहा था, लोगों की भीड़ भी बढ़ती जा रही थी।

बिहार की राजधानी पटना के दुल्हिन बाजार में स्थापित जगदेव प्रसाद की प्रतिमा

एक खास बात यह कि दुल्हिन बाजार जहां जगदेव बाबू की सभा आयोजित थी, उस इलाके में भले ही संख्या दलितों और पिछड़ों की अधिक है लेकिन दबदबा सामंती लोगों का ही था। इस लिहाज से दुल्हिन बाजार में सभा का आयोजन बहुत महत्वपूर्ण था। सभी को लग रहा था कि आज जगदेव बाबू के संबोधन में जरूर कोई खास बात होगी। इसकी वजह यह कि प्रदेश में सत्तासीन सरकार के खिलाफ विरोध तब गांवों तक में पहुंच चुका था। यही वजह रही कि सभा को लेकर स्थानीय प्रशासन भी अलर्ट था।

मेरे लिए यह पहला अनुभव था कि मेरे सामने एक जन-सैलाब था और हमारे प्रांत के शीर्ष नेताओं में से एक हमारे सामने थे। मैं तो यह मानता हूं कि जगदेव बाबू जितने बड़े राजनीतिज्ञ थे, उतने ही वे समाज सुधारक भी।

मंत्रिमंडल की बैठक में भाग लेते जगदेव प्रसाद, तस्वीर साभार : विद्युत प्रकाश सेनपति(जगदेव प्रसाद के बड़े बेटे)

खैर, जगदेव बाबू का संबोधन शुरू हुआ। उनके संबोधन की दो बातें अब भी मुझे याद है। शेष संभवत: इसलिए नहीं कि मेरी अपनी उम्र 68 वर्ष हो गई है। पहली बात तो यह कि वे ब्राह्मणवाद का विरोध करते थे। अपने भाषण में उन्होंने अपने हाथ की पांचों उंगलियों को दिखाते हुए कहा कि जो सबसे ऊपर है वह ब्राह्मण है, उसके बाद वाला क्षत्रिय और उसके बाद वाला वैश्य। सबसे नीचे शूद्र समाज है जिसके

ऊपर सभी का बोझ है। तब जगदेव बाबू ने कहा था कि समय आ गया है कि अब हाथ को पलट दिया जाए। जो शूद्र है वह सबसे ऊपर हो। हमारी लड़ाई यही है।

पटना के दुल्हिन बाजार में स्थापित जगदेव प्रसाद स्मारक

एक दूसरी बात जो जगदेव बाबू ने अपने ओजस्वी भाषण में कही, वह उन दिनों द्विज वर्ग को अंदर तक चुभती थी, कहना गैर वाजिब नहीं कि आज भी वे उसकी चुभन महसूस करते हैं। इसके पहले मैंने उनका नारा सुना था – 'अबकी सावन भादो में, गोरी कलाइयां कादो में'। उनके इस नारे ने दलित-पिछड़े समाज के लोगों को झकझोर कर जगा दिया था। उस दिन अपने संबोधन में जगदेव बाबू ने कहा – एक कतार है। इस कतार में सबसे पहले ब्राह्मण है जो क्षत्रिय को जूता मारता है। क्षत्रिय वैश्य को जूता मारता है और वैश्य शूद्र को। लेकिन इस कतार को वृताकार बना देना चाहिए ताकि शूद्र ब्राह्मण को जूता मार सके। जिस दिन ऐसा हो गया, समाज बदल जाएगा। शोषण-उत्पीड़न सब खत्म हो जाएगा। लेकिन इसके लिए सबसे पहले हमें एकजुट होना होगा और उनकी साजिशों को नाकामयाब करना होगा। यह लंबी लड़ाई है।

जैसा कि मैंने पहले बताया कि उन दिनों मेरी उमर कम थी और यह भी कि वह पहला मौका था अपने प्यारे नेता को देखने और सुनने का, मेरा मन रोमांचित हो गया था। आप इसका अनुमान इसी से लगा सकते हैं कि जब भी मैं उनके कहे शब्दों के बारे में सोचता हूं, मैं अपने अंदर एक ऊर्जा महसूस करता हूं।

मुझे जगदेव बाबू की एक और बात अच्छी तरह से याद है। आप यह तो जानते ही हैं कि बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर ने मनुस्मृति का दहन किया था। लेकिन मैं आपको बताऊं कि बिहार में एकमात्र नेता जगदेव बाबू हुए जो अपनी सभाओं में रामायण की प्रतियां जलाते-जलवाते और लोगों से जनेऊ तोड़वाते थे।

यह उनका ही प्रभाव था कि मेरे पिता जगदीश महतो ने पूजा-पाठ छोड़ दिया। यह केवल मेरे पिता पर हुआ असर नहीं था। आज भी आप यदि मध्य बिहार के ग्रामीण इलाकों में जाएंगे तो आप पाएंगे कि हर गांव में दो-चार परिवारों के लोग ब्राह्मणों को अपने यहां किसी कार्यक्रम में नहीं बुलाते हैं।

बहरहाल, मुझे इस बात का संतोष है कि मैंने जगदेव बाबू को देखा, सुना और उनके विचारों पर अबतक अमल किया है।

(नवल किशोर कुमार से बातचीत के आधार पर)

(संपादन : नवल)